अनादि अनिधन

# जिनागम पंथ जयवंत हो

( स्वर्णिम विमर्शोत्सव एवं रजत संयमोत्सव वर्ष 2022-24 के अवसर पर )

-आचार्य विमर्शसागर विरचित

# शुद्धात्मानुप्रेक्षा

(मंगलाचरण)

बंदू पंच परम् गुरु , आगम चक्षु महान ।
गाऊँ बारह भावना, सर्व लोक सुख दान ।।

# (अनित्य अनुप्रेक्षा)

अहो ! कौन इस जग में अपना, किसको अपना मानूँ ।
साथी सभी पराये होंगे , किसको अपना जानूँ ।।
धन्य शलाका पुरुष एक दिन, सब मृत्यु के साथी ।
है अनित्य का खेल यहाँ सब, रथिक पियादे हाथी ।।

# (अशरण अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! शरण खोजता चहुँगति शरण न पावे ।
नूतन घर-परिवार सजावे, अशरण ही कहलावे ।।
परम दिगम्बर देव-धर्म-गुरु, ये ही शरण कहाते ।
निज चैतन्यदेव शरणागत, भविजन शिवगति पाते ।।

## (संसार अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! चतुर्गति में, जनम-मरण दुःख पाया ।
पुण्य उदय से संपत्ति पाई, मन फिर भी ललचाया ।।
यह संसार - वास दुखकारी, क्षणिक शांति न पावे ।
सहज शुद्ध ज्ञायक प्रभु ध्यावो, जो पंचमगति ल्यावे ।।

# (एकत्व अनुप्रेक्षा)

स्त्री- पुत्र स्वजन - परिजन सब, पुण्य उदय जब साथी ।
जीव असाता समय अकेला, किसका कौन संगाती ।।
यह संसार स्वार्थगृह भाई, कोई काम न आवे ।
एक निजातम ही साँचा गृह, ज्ञानी निज गृह पावे ।।

# (अन्यत्व अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! मोह उदय में, स्व-पर भेद न जाना ।
तन-धन- परिजन स्वजन सभी को, अपना अपना माना ।।
हाय-हाय यह भूल अनादि, कबहुँ न बिसराई ।
जिनवाणी सुन पर- रुचि त्यागो, सद्गुरु शिक्षा दाई ।।

# (अशुचि अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! महा अशुचि तन, अज्ञानी नित चावे ।
नाना भूषण अलंकार से, यह तन नित्य सजावे ॥
नाना सुरभित लेप करे, श्रृंगार करें, सुख माने ।
सुख का कारण शुद्धज्ञानमय चेतन न पहिचाने ॥

# (आस्त्रव अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! मिथ्यादर्शन, अविरति भाव बनाये ।
अन्य प्रमाद कषाय योग सब, आस्त्रव भाव धराये ।।
पुण्य-पाप रागादि भाव, जो दुःखमय हैं, सुख माना ।
शुद्ध निरास्त्रव वीतराग निज ज्ञायक न पहिचाना ।।

## (संवर अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! तेरह विध चारित्र हृदय स्वीकारो ।
द्वादश अनुप्रेक्षा दसधर्म परिषह बाइस धारो ।।
शुभ भावों से अशुभ भाव का संवर पूर्व लहावे ।
शुद्धभाव से भावशुभाशुभ संवर पूर्ण कहावे ।।

## (निर्जरा अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! समय - समय सविपाक निर्जरा पाई।
कर्म आस्त्रव रहा निरंतर कर्म विजय न पाई ।।
स्वात्मयोग, शुद्धोपयोग अविपाक निर्जरा दाता ।
ज्ञानी संवर- निर्जर पथ से मुक्तिवधु को लाता ।।

# (लोक अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! छह द्रव्यों का रहता जहाँ बसेरा ।
चौदह राजू लोक अनादि, भव भूतों का डेरा ।।
जन्म-मरण इक - इक प्रदेश पर हाय अनन्तों पाये ।
कभी असंख प्रदेश निजातम प्रभु न हृदय समाये ।।

# (बोधि दुर्लभ अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! पुण्य उदय से, नरभव तूने पाया ।
बाह्य विभव श्रावक व्रत-मुनिव्रत, किंतु न समकित भाया ।।
नव ग्रीवक तक सौख्य लहा, रे बोधि ज्ञान न जागा ।
सिद्ध समा भगवान आत्मा, भव-भव भ्रमा अभागा ।।

# (धर्म अनुप्रेक्षा)

अहो आत्मन् ! अरिहंतों ने धर्म अहिंसा गाया ।
रागद्वेष-मद-मोहरहित वस्तुस्वभाव बतलाया ।।
सर्व पंथ के वसन उतारो, मोक्षपंथ उर धारो ।
वीतरागमय धर्म ही साँचा, चेतन भूल सुधारो ।।

शुद्धात्मानुप्रेक्षा

जो भवि बारह भावना, भाव सहित नित भाय ।
परमदशा वैराग्य की, वह 'विमर्श' प्रगटाय ॥

जतारा नगर गौरव आचार्य प्रवर के 51 वें अवतरण दिवस पर
गुरु चरणों कोटि कोटि नमन....

नमनकर्ता : जिनागम पंथी श्रावक संघ ,जतारा

भावलिंगी संत